International Conference on Social Science & Humanities Trends
April 2025
International Journal for Research Trends in Social Science & Humanities
ISSN: 2584-2455

भारतीय ज्ञान परंपरा और उसके मूल तत्व

डॉ. मंजूषा
असिस्टेंट प्रोफेसर (भौतिक विज्ञान)
दमयंती राज आनंद राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बिसौली (बदायूँ)
Email Id: manjushadragdc@gmail.com

शोध सार

भारतीय ज्ञान परंपरा (**IKS**) मिथक के पीछे छिपे सत्य को उजागर करने का एक सशक्त प्रयास है। **IKS** परंपरा से प्रमाण तक की ज्ञान यात्रा है तथा प्राचीन ज्ञान और आधुनिक सत्य का सेतु है। **IKS** मिथक नहीं, वैज्ञानिक सत्य की विरासत है। भारतीय ज्ञान परंपरा हमारे प्राचीन ग्रंथों, परंपराओं और विचारों में निहित वैज्ञानिक, दार्शनिक एवं व्यावहारिक सत्यों को समझने और उन्हें आधुनिक संदर्भ में पुनर्स्थापित करने का एक महत्वपूर्ण प्रयास है। भारतीय ज्ञान परंपरा के चार मुख्य आधार:

- **Preservation (**संरक्षण
- **Addition (**संवर्धन)
- **Innovation (**नवाचार)
- **Adaptation (**अनुकूलन)

1. भारत का अर्थ:

भायां रतम् भारतम्

- भा (**Bha): Light (**प्रकाश/ज्ञान)
- यां (**Ya): Knowledge (**ज्ञान)
- रत (**Rat): Immersed (**लीन होना)

वह व्यक्ति या समाज जो ज्ञान में लीन है।)

2. प्राचीन समय में भारत:

स्वं स्वं चरितं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवाः। (मनुस्मृति)

अर्थात् पृथ्वी के समस्त मानव भारत आकर चरित्र निर्माण की शिक्षा ग्रहण करते थे।

सा विद्या या विमुक्तये (शिक्षा वह है जो मुक्त करे)

- प्राचीन काल में शिक्षा प्रणाली को ज्ञान, परंपरा और उन प्रथाओं के स्रोत के रूप में माना जाता था जो मानवता को निर्देशित और प्रोत्साहित करती थीं।
- ऋग्वेद काल से ही मुख्य केंद्र: समग्र विकास (जीवन के नैतिक, शारीरिक, आध्यात्मिक और बौद्धिक पहलू)।
- मूल्य: विनम्रता, सत्यनिष्ठा, अनुशासन, आत्मनिर्भरता और सम्मान।

प्राचीन परीक्षा एवं उपाधियाँ:

- स्नातक (**Snatak**): **12** वर्ष का सामान्य पाठ्यक्रम या एक वेद का अध्ययन पूर्ण करने वाले।
- वसु (**Vasu**): **24** वर्ष का अध्ययन या दो वेदों का अध्ययन पूर्ण करने वाले।
- रुद्र (**Rudra**): **36** वर्ष का अध्ययन या तीन वेदों का अध्ययन पूर्ण करने वाले।
- आदित्य (**Aditya**): **48** वर्ष का पाठ्यक्रम या चारों वेदों का अध्ययन पूर्ण करने वाले।

3. **विकसित भारत** @ 2047 **के विजन में** IKS **की भूमिका**:

भारतीय शिक्षा के आधार पर "भारत का विकास" के मुख्य स्तंभ:

- भारतीय संस्कृति (**Indian Culture**)
- भारतीय दर्शन एवं विश्वदृष्टि (**Vasudhaiva Kutumbakam**)
- भारतीय ज्ञान परंपरा (**IKS**)
- भारतीय भाषा (**Indian Languages**)

विजन रोडमैप (**Vision Roadmap**): **2025** से **2035**: परिप्रेक्ष्य योजना और दस वर्षीय रोड मैप (वि-औपनिवेशीकरण/**Decolonisation**)।

2035 से **2047** तक की योजना:

- व्यक्ति निर्माण और व्यवस्था परिवर्तन।
- बौद्धिक नेतृत्व - धर्म के आधार पर अर्थ एवं काम की व्यवस्था।
- नैतिक नेतृत्व - श्रद्धा निर्माण, भावात्मक वातावरण बनाना।
- "अब रोना नहीं" - आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ना।

प्राचीन भारतीय शिक्षा पद्धति को समृद्ध करने हेतु तीन शक्तियाँ:

- ज्ञान शक्ति
- क्रिया शक्ति
- इच्छा शक्ति

श्रेष्ठ भारत की संकल्पना:

- शिक्षित भारत (**Educated India**): साक्षर एवं वैचारिक रूप से शिक्षित।
- समर्थ भारत (**Empowered India**): स्वावलम्बी, सुरक्षित और संगठित।
- समृद्ध भारत (**Prosperous India**): वैभवशाली और दिव्य भारत।
- सुखी भारत (**India at Peace**): मन की शांति और परिवार/कुटुंब की शांति।

4. प्राचीन भारत की शिक्षा प्रणाली - प्राचीन काल की शिक्षा पद्धति

प्राचीनकालीन शिक्षा पद्धति आज की तुलना में पूर्णतया भिन्न थी। यह एक प्रकार की साधना होती थी। प्राचीन-कालीन शिक्षा पद्धति मनुष्य का सर्वांगीण (शारीरिक, मानसिक तथा आध्यात्मिक) विकास कर उसे सच्चे अर्थों में मनुष्य बनाया करती थी। वह व्यक्ति को इस योग्य बना देती थी कि वह जीव, जगत, ईश्वर और आत्मा के सभी रहस्यों को बुद्धिपूर्वक समझकर अपने जीवन को सफल बना सके। यह प्रणाली पुस्तकीय ज्ञान की अपेक्षा व्यावहारिक ज्ञान एवं चरित्र निर्माण पर अधिक बल देती थी।

शतपथ ब्राह्मण में एक ऐसा स्थल आता है जिसमें माता, पिता एवं गुरु तीनों को ही गुरु बतलाया गया है- "पितृमानाचार्यवान् पुरुषो वेद।" और इन तीनों गुरुओं का समय भी निर्धारित था अर्थात गर्भाधान से लेकर पाँच वर्ष की आयु तक बालक को माता द्वारा शिक्षा प्राप्त होती थी। पाँचवे से सातवे-आठवें वर्ष तक पिता द्वारा, तत्पश्चात् उपनयन संस्कार हो जाने पर आचार्य द्वारा शिक्षा प्राप्त होती थी। बालक को उपनयन संस्कार से लेकर 25 वर्ष की अवस्था तक गुरुकुल में रहना होता था और इस अवधि में बालक गुरु से सब प्रकार की शिक्षा प्राप्त किया करता था। आश्रम व्यवस्था में प्रथम ब्रह्मचर्य आश्रम का सम्बंध इसी शिक्षा प्रणाली से था। मानव जीवन के साफल्य के लिये ऋषियों ने जो वर्ग-चतुष्टय (धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष) की व्यवस्था की है उनकी भी शिक्षा इसी आश्रम में दी जाती थी।
इस प्रथम आश्रम में रहकर विद्यार्थी न केवल वेद शाखाओं का ही अध्ययन करता था अपितु वह जीवनोपयोगी सभी प्रकार की बातों का भी ज्ञान प्राप्त कर लेता था। सात-आठ वर्ष की अवस्था में ही बालक को इस आश्रम में प्रविष्ट करा दिया जाता था। वहीं वह अपने आचार्य द्वारा उपनीत होकर गुरुकुल को अपना घर समझकर विद्याध्ययन में रत रहता था। उस समय के गुरुकुलों की देखरेख तत्कालीन राजाओं के ही द्वारा हुआ करती थी। ये आश्रम प्रायः गाँव या नगर के कोलाहल से दूर वनों में होते थे जहाँ लौकिक आकर्षणों का कोई स्थान न था। प्रकृति के उन्मुक्त वातावरण में रहकर तत्कालीन छात्र विद्या, ज्ञान, तप एवं स्वास्थ्य का संचय किया करते थे। उस काल में बालक तथा बालिकायें सभी प्रकार के भेद भावों से रहित होकर बड़े सौहार्द एवं स्नेह के साथ ज्ञानोपार्जन में रत रहते थे। विद्यार्थी बिल्कुल सादे वस्त्र धारण कर गुरुसेवा करते हुये वेद, वेदांगों का अध्ययन किया करते थे। उस काल में शुल्क के रूप में धन का प्रचलन न होकर मात्र गुरु-सेवा ही हुआ करती थी।
आचार्य कौटिल्य ने तत्कालीन प्रचलित शिक्षा-प्रणाली को आठ भागों में विभक्त किया है-

- शुश्रूषा: विद्या प्राप्ति हेतु विद्यार्थी का गुरु सेवा में रत होना।
- श्रवणम्: सेवा द्वारा गुरु के प्रसन्न हो जाने पर उनसे सुनना।
- ग्रहणम्: गुरु से सुने हुये पाठ को ग्रहण करना।
- धारणम्: ग्रहण किये हुये पाठ का चिन्तन-मनन करना।
- ऊह-पोह: गृहीत पाठ के विषय में गुरु से वाद-विवाद एवं प्रश्नोत्तर करना।

5. प्राचीन भारतीय विद्यार्थियों का दैनिक जीवन

प्राचीन काल में विद्यार्थी को ब्रह्मचारी कहा जाता था। ब्रह्म का शाब्दिक अर्थ होता है ज्ञान। इस प्रकार ब्रह्मचारी वह कहलाता था जो ज्ञान प्राप्ति हेतु निश्चित जीवन विधि का पालन करता था। गुरुकुलों में रहने वाले इन विद्यार्थियों का जीवन बड़ा संयत एवं अनुशासित था। छात्र गुरुओं के सानिध्य में रहते हुये ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करते थे। इन ब्रह्मचारियों के लिये कुछ नियम जैसे वाक्संयम, भूमिशयन, अग्निपरिचर्या, सन्ध्योपासनादि निश्चित थे और वे इनका पूर्णतः पालन किया करते थे।

प्रतिदिन प्रातः ब्रह्ममुहूर्त में उठकर शौच, स्नान, सन्ध्योपासनादि से निवृत्त होकर ये छात्र अध्ययन में रत होते थे। इसके साथ ही इन्हें यज्ञ सम्बन्धी क्रियाओं अग्निहोत्रादि का भी अभ्यास करना पड़ता था। मनु ने ब्रह्मचारी के लिये भोग विलास की साम्रगियों तथा ब्रह्मचर्य विघातक वस्तुओं का पूर्णतः निषेध बतलाया है।

सुखार्थिना कुतो विद्या विद्यार्थिनः कुतो सुखम्।
सुखार्थी वा त्यजेद् विद्यां विद्यार्थी वा त्यजेद् सुखम्।।
– (***महाभारत - उद्योगपर्व*** - 40/6)

प्रातः कालीन हवन आदि से निवृत्त होने के पश्चात् विद्यार्थी गुरु से पाठ पढ़ते थे। तदनन्तर भिक्षाटन हेतु समीपस्थ नगर तथा ग्रामों में जाना होता था। भिक्षा में प्राप्त वस्तुओं को शिष्य गुरु को समर्पित करते थे और गुरु शिष्य को उसमें से कुछ अंश देता था–

समाहृत्य तु तद् भैक्ष्यं यावदन्नममायया।
निवेद्य गुरवेऽश्नीयादाचम्य प्राङ्मुखः शुचिः।।
– (***मनु०*** 2/51)

इस भिक्षाटन पद्धति से भोजन आदि वस्तुएँ तो प्राप्त हो ही जाती थीं, इसके अतिरिक्त इससे एक लाभ यह भी होता था कि विद्यार्थी में मधुर भाषण, नम्रता, सहिष्णुता आदि सुन्दर गुणों का समावेश हो जाता था। प्राचीन काल में गुरु और शिष्य का बड़ा ही पवित्र सम्बंध था। शिष्य गुरु को पितृवत् समझकर निरभिमान होकर गुरु की आज्ञाओं का पालन करते थे और गुरु उन्हें पुत्रवत् मानकर बिना किसी भेदभाव के शिक्षा प्रदान किया करते थे।

प्राचीन भारत के विश्वविद्यालय

- तक्षशिला
- नालन्दा
- विक्रमशिला
- वल्लभी विश्वविद्यालय

प्राचीन भारत में लेखन कला तथा लिपि

- ब्राह्मी लिपि
- खरोष्ठी लिपि
- सिन्धु घाटी लिपि

ब्राह्मी लिपि ही भारतीय अन्य लिपियों की जनक है। उत्तरी ब्राह्मी लिपि सम्भवतः भारत की सबसे अधिक प्राचीन लिपि है। यह लिपि पूर्णतः भारतीय है तथा भारत की अन्य लिपियों का विकास इसी लिपि से हुआ है। सामान्यतः 500 ई.पू. से लेकर 350 ई.पू. तक ब्राह्मी लिपि का प्रयोग देखने को मिल जाता है। तदनन्तर इसी से अन्य भारतीय लिपियों का विकास हुआ है।

खरोष्ठी लिपि: इसे कुछ विद्वान गदहा लिपि भी कहते हैं। इसके नामकरण के विषय में विद्वानों में मतभेद हैं। डॉ. चटर्जी की मान्यता है कि हिब्रू भाषा के 'खरोराय' शब्द से इसका सम्बंध है जिसका अर्थ है 'लिखावट'। सम्भवतः खरी लिखी जाने के कारण ही खरोष्ठी कहलाई। यह लिपि विदेशी है। इसका प्रचलन मुख्य रूप से भारत के उत्तरी पश्चिमी भाग तक ही सीमित था। इसके प्रचलन के विषय में यह मान्यता है कि ईरानी सम्राट डेरियस ने इसका प्रचलन भारत में किया था।
सिन्धु घाटी लिपि: हड़प्पा एवं मोहनजोदड़ों की खुदाइयों से प्राप्त लिपि वहाँ से प्राप्त मुद्राओं पर अंकित देखी गई है।
प्राचीन भारत में शिक्षा केवल ज्ञानार्जन का माध्यम नहीं थी, बल्कि मानव निर्माण, चरित्र निर्माण और आत्मोन्नति की समग्र प्रक्रिया मानी जाती थी। भारतीय शिक्षण परम्परा का उद्देश्य व्यक्ति को केवल विद्वान बनाना नहीं, बल्कि उसे नैतिक, आध्यात्मिक, सामाजिक एवं बौद्धिक रूप से परिपूर्ण मानव के रूप में विकसित करना था।

मनुस्मृति में उल्लिखित श्लोक –
"स्वं स्वं चरितं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवाः।"

यह संकेत करता है कि भारत प्राचीन काल में विश्व का ज्ञान-केंद्र था, जहाँ पृथ्वी के विभिन्न क्षेत्रों से विद्यार्थी आकर चरित्र निर्माण एवं जीवन-दर्शन की शिक्षा प्राप्त करते थे।
भारतीय शिक्षा-दर्शन का मूल सिद्धान्त "सा विद्या या विमुक्तये" रहा है, अर्थात वही विद्या वास्तविक है जो मनुष्य को अज्ञान, बन्धनों और संकीर्णताओं से मुक्त करे।

वैदिक कालीन शिक्षा की विशेषताएँ
ऋग्वैदिक काल से ही भारतीय शिक्षा प्रणाली का केन्द्र समग्र विकास (**Holistic Development**) रहा, जिसमें जीवन के सभी आयामों को संतुलित रूप से विकसित करने पर बल दिया गया–

- नैतिक विकास – सत्य, विनम्रता एवं सदाचार
- शारीरिक विकास – स्वास्थ्य, श्रम एवं आत्मानुशासन
- आध्यात्मिक विकास – आत्मबोध एवं आत्मसंयम
- बौद्धिक विकास – तर्क, चिंतन एवं ज्ञान-विस्तार

इस शिक्षा प्रणाली में निम्न जीवन-मूल्यों को विशेष महत्व दिया गया–
विनम्रता, सत्यनिष्ठा, अनुशासन, आत्मनिर्भरता तथा पारस्परिक सम्मान।

प्राचीन भारत में शिक्षा की अवधि, ज्ञान की गहराई तथा वेदाध्ययन के आधार पर विद्यार्थियों को विभिन्न उपाधियाँ प्रदान की जाती थीं–
- स्नातक (**Snātaka**): लगभग 12 वर्षों की सामान्य शिक्षा या एक वेद का अध्ययन पूर्ण करने वाले विद्यार्थी।
- वसु (**Vasu**): 24 वर्षों के अध्ययन अथवा दो वेदों में पारंगत विद्यार्थी।
- रुद्र (**Rudra**): 36 वर्षों के अध्ययन या तीन वेदों के गहन ज्ञान वाले विद्यार्थी।

➢ आदित्य (Āditya): 48 वर्षों की उच्च शिक्षा या चारों वेदों में निपुण विद्वान।

यह व्यवस्था दर्शाती है कि प्राचीन भारत में शिक्षा ज्ञान की गहराई, अनुशासन और दीर्घकालीन साधना पर आधारित थी।

विकसित भारत @2047 में भारतीय ज्ञान परम्परा (IKS) की भूमिका

वर्तमान वैश्विक परिप्रेक्ष्य में **Indian Knowledge System (IKS)** केवल ऐतिहासिक विरासत नहीं, बल्कि भविष्य निर्माण का बौद्धिक आधार है। विकसित भारत के निर्माण हेतु शैक्षिक नेतृत्व (**Academic Leadership**) को तीन मूल प्रश्नों पर कार्य करना होगा–
भारत के विकास के चार बौद्धिक आधार

भारतीय शिक्षा दृष्टि के आधार पर राष्ट्र-विकास निम्न चार स्तम्भों पर आधारित है–
1. भारतीय संस्कृति – जीवन मूल्यों एवं सभ्यतागत निरन्तरता का संरक्षण
2. भारतीय दर्शन एवं विश्वदृष्टि – "वसुधैव कुटुम्बकम्" की वैश्विक चेतना
3. भारतीय ज्ञान परम्परा (IKS) – परम्परा एवं आधुनिक विज्ञान का समन्वय
4. भारतीय भाषाएँ – ज्ञान के लोकतंत्रीकरण का माध्यम

विजन रोडमैप : विकसित भारत की दिशा
चरण I : 2025–2035

* औपनिवेशिक मानसिकता से मुक्ति (**Decolonisation**)
* भारतीय ज्ञान-आधारित शिक्षा नीति का सुदृढ़ीकरण
* शोध, नवाचार एवं स्वदेशी ज्ञान प्रणालियों का पुनर्संस्थापन

चरण II : 2035–2047
1. व्यक्ति निर्माण एवं व्यवस्था परिवर्तन
2. बौद्धिक नेतृत्व – धर्माधारित संतुलित अर्थव्यवस्था एवं जीवन व्यवस्था
3. नैतिक नेतृत्व – श्रद्धा, विश्वास एवं संवेदनशील सामाजिक वातावरण का निर्माण
4. सकारात्मक राष्ट्रीय चेतना – आत्मविश्वासी एवं समाधानमुखी समाज

भारतीय शिक्षा पुनर्जागरण की त्रि-शक्ति

प्राचीन भारतीय दृष्टि के अनुसार राष्ट्रनिर्माण तीन शक्तियों के संतुलन से सम्भव है–
* ज्ञान शक्ति – बौद्धिक जागरण
* क्रिया शक्ति – कर्मप्रधान विकास
* इच्छा शक्ति – राष्ट्रीय संकल्प एवं आत्मविश्वास

श्रेष्ठ भारत की परिकल्पना
भारतीय ज्ञान परम्परा पर आधारित विकसित राष्ट्र की अवधारणा चार आयामों में व्यक्त होती है–
1. शिक्षित भारत – ज्ञानसम्पन्न एवं जागरूक समाज

2. समर्थ भारत – आत्मनिर्भर, सुरक्षित एवं संगठित राष्ट्र
3. समृद्ध भारत – सांस्कृतिक एवं आर्थिक वैभव से सम्पन्न भारत
4. सुखी भारत – "मनः शान्तिः, कुटुम्ब शान्तिः" पर आधारित संतुलित एवं शांतिपूर्ण समाज

संदर्भ ग्रंथ सूची (References)

1. त्रिपाठी, बाबूराम एवं शर्मा, श्री भगवान। **प्राचीन भारतीय संस्कृति के मूल तत्त्व**। (प्रामाणिक सांस्कृतिक विश्लेषण हेतु)।
2. सरस्वती, रामप्रकाश एवं शर्मा, विश्वनाथ। **मनुस्मृति (सटीक)**। (प्राचीन सामाजिक एवं विधिक व्यवस्था के स्रोत हेतु)।
3. राधाकृष्णन, सर्वपल्ली (1923)। **भारतीय दर्शन (Indian Philosophy)**, खंड 1 एवं 2। लंदन: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस। (वैश्विक परिप्रेक्ष्य में भारतीय विचारधारा हेतु)।
4. काणे, पाण्डुरंग वामन (1930–1962)। **धर्मशास्त्र का इतिहास (History of Dharmasastra)**, खंड 1–5। पुणे: भांडारकर ओरिएंटल रिसर्च इंस्टीट्यूट। (भारतीय ज्ञान परंपरा के विस्तृत ऐतिहासिक अध्ययन हेतु)।
5. कपूर, कपिल (2005)। **इण्डियन नॉलेज सिस्टम्स (Indian Knowledge Systems)**। नई दिल्ली: डी.के. प्रिंटवर्ल्ड। (IKS के आधुनिक और वैज्ञानिक विश्लेषण हेतु)।
6. भारत सरकार, शिक्षा मंत्रालय (2020)। **राष्ट्रीय शिक्षा नीति** 2020 **(NEP 2020)**। नई दिल्ली। (IKS के वर्तमान शैक्षिक क्रियान्वयन और विजन 2047 हेतु)।
7. आर्यभट्ट (499 ई.)। **आर्यभटीयम्** (संपादक: के. एस. शुक्ल)। नई दिल्ली: इंडियन नेशनल साइंस एकेडमी। (प्राचीन भारतीय गणित और खगोल विज्ञान के प्रमाण हेतु)।
8. चरक (प्रणीत)। **चरक संहिता**। वाराणसी: चौखम्बा भारती अकादमी। (प्राचीन भारतीय चिकित्सा विज्ञान और जैविक ज्ञान हेतु)।